7

# सशक्तीकरण के लिए शिक्षक प्रशिक्षण

प्रताप मल्ल देवपुरा*

*शिक्षण एक ज़िम्मेदारी वाला कार्य है। एक शिक्षक के लिए यह जानना अति आवश्यक है कि जो वह बच्चों को पढ़ा रहा है या संदेश देना चाह रहा है क्या वह उसी रूप में बच्चों तक पहुँच रहा है? एक ही कक्षा में विभिन्न प्रकार के बच्चे होते हैं और प्रत्येक बच्चे का पारिवारिक माहौल भी एक-दूसरे से अलग होता है। ऐसे में प्रत्येक बच्चे की समझ में अंतर होना साधारण-सी बात है। इन्हीं सभी परिस्थितियों के कारण शिक्षक का दायित्व शिक्षण के प्रति और बढ़ जाता है और उसे भी प्रशिक्षण की आवश्कता होती है। अब सवाल यह उठता है कि प्रशिक्षण कैसे दिया जाए? किन विधियों का प्रयोग किया जाए और प्रशिक्षण के दौरान कौन-कौन सी सावधानियाँ बरती जानी चाहिए। आइए लेख सशक्तीकरण के लिए शिक्षक प्रशिक्षण को पढ़कर जानें कि एक शिक्षक के व्यक्तित्व में प्रशिक्षण की क्या भूमिका होती है।*

वर्ष 2011 में की गई भारत की 15वीं जनगणना में साक्षरता का प्रतिशत 65% से बढ़कर 75% हो गया। देश में शिक्षा की माँग बढ़ी, उसी के अनुरूप शिक्षण सुविधाएँ भी बढ़ाए जाने की आवश्यकता हो रही है। छात्र-छात्राओं व विद्यालयों की संख्या के अनुपात में शिक्षकों की आवश्यकता भी बढ़ी है। शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों के कौशल में विकास किए जाने की आवश्यकता है। अनेक प्रशिक्षण संस्थान खुले हैं प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने के उपायों पर निरंतर विचार किया जा रहा है। शिक्षा के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए संसद द्वारा शिक्षा अधिनियम-2009 पारित किया गया था जिससे नए विद्यालय बनाने, उनमें निर्धारित संख्या में शिक्षक लगाने की आवश्यकता भी होगी। प्रशिक्षण के मुद्दो को समझने के लिए अनेक सवालों के जवाब तलाशने होंगे। उन्हीं में से कुछ मुददों पर यहाँ चर्चा की जा रही है।

**शिक्षकों के लिए विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता क्यों है?** शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता को प्रतिपादित करने के लिए अनेक कारण गिनाए जा सकते हैं। शिक्षकों के प्रशिक्षण के विभिन्न

* *शिविरा पत्रिका* (अंक-अगस्त 2012) से साभार

पक्षों पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

- विषय वस्तु को बालक-बालिकाओं के समक्ष प्रस्तुत करने की विभिन्न विधाओं को समझना एवं प्रस्तुतीकरण का कौशल अर्जित करना जिससे शिक्षण कला में निपुणता आ सके।
- जिन बालक-बालिकाओं के लिए शिक्षण की व्यवस्था की जानी है उनमें अनेक व्यक्तिगत भिन्नताएँ हैं, उन्हें समझने के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण आवश्यक है।
- बालकों के समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली जानकारियों को अद्यतन करने की कला को सीखना।
- माता-पिता अपने बच्चों को शिक्षित, अनुशासित एवं नैतिक गुणों से परिपूर्ण करने के लिए शिक्षकों को सौंपते हैं। शिक्षकों का दायित्व है कि वे माता-पिता की आकांक्षाओं को पूरा करने का दायित्व निभाएँ।
- शिक्षक को यह सीखना पड़ेगा कि बालक/बालिका अपने परिवेश के साथ किस प्रकार से बेहतर समायोजन करें?
- बालक-बालिकाओं की दैनिक समस्याओं, व्यवस्था संबंधित जानकारियों, प्रशासनिक व्यवस्थाओं, नीतिगत मामलों आदि मुद्दों को समझने के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है।
- शिक्षा के जटिल मुद्दों जिनमें शिक्षाक्रम, मूल्यांकन आदि विषयों पर समझ विकसित करनी होती है।
- शिक्षक की कार्यक्षमता को बढ़ाकर उनके सोच एवं व्यवहार में मानवीय गुणों का विकास करना होता है।
- समता, संवेदनशीलता,पारदर्शिता, जवाबदेहिता तथा सहभागिता के नियमों को जानना एवं तद्नुरूप बालक-बालिकाओं में उन गुणों का विकास करना।
- आत्मसम्मान,आत्मविश्वास, सहयोग एवं सक्रिय व्यवहार को बढ़ावा देकर नेतृत्व के गुणों का विकास किया जाना आवश्यक है।
- शिक्षक पर विभिन्न शैक्षिक सामाजिक जिम्मेदारियाँ भी डाली जाती हैं उन्हें चुनाव, जनगणना आपातकालीन सेवाएँ, विवरण प्रणाली, प्रशासनिक दायित्व आदि आकस्मिक सेवाओं को देने के लिए सक्षम बनना होता है।

### प्रशिक्षण व्यवस्था किन समस्याओं का हल खोजना चाहती है?

- शिक्षण प्रक्रिया व्यावहारिक बने।
- शिक्षण कला प्रभावी हो।
- विभिन्न बौद्धिक क्षमता के विकास पर ध्यान देना।
- शिक्षण विधाओं का विकास एवं खोज जारी रखना।
- अपने दायित्वों के प्रति शिक्षक सजग बनें।

**शिक्षकों के समक्ष चुनौतियाँ** – शिक्षकों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ सदैव ही रही हैं। ये चुनौतियाँ कई प्रकार की हो सकती है। इसमें शिक्षार्थियों की विविधता के अनुरूप शिक्षण करना अपने आप में एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

एक ही कक्षा में विभिन्न गति से सीखने वाले बच्चे, अथवा विशेष चुनौती वाले बच्चों को शिक्षण करना, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से पिछड़े अथवा अगड़े बालकों

का एक साथ शिक्षण करना। विविधताओं से परिपूर्ण समस्त छात्र-छात्राओं को जो एक ही कक्षा में पढ़ रहे है उन्हें किसी समान स्तर तक लाना एक चुनौती होती है।

विषय एवं कक्षा अनुरूप सुविधाएँ एवं सामग्री उपलब्ध नहीं होना एक चुनौती है। उनका प्रबंध करना भी एक टेढ़ी खीर है। एक बार एकत्रित सामग्री को सुरक्षित रखने की वयवस्था करना। उन्नत शिक्षण विधाओं की जानकारियाँ प्राप्त करना एवं उनका प्रयोग करना आना चाहिए। इसलिए शिक्षण सुविधाएँ और गुणवत्तायुक्त सामग्री शिक्षण जुटाने की चुनौती है।

तीसरी चुनौती प्रशासनिक व्यवस्थाओं में अनिर्णय की स्थिति, सूचना तंत्र का कमजोर होना, पदों की रिक्तियाँ होने से कार्य का दवाब, अवांछित स्थानांतरण आदि अनेक समस्याएँ बनी रहती हैं। शिक्षण के अतिरिक्त दायित्वों के कारण शिक्षण समय का अभाव रहता है। विभिन्न विभागों में समन्वय का अभाव होने से कार्य में कठिनाइयाँ रहती हैं। इनका सामना करने के लिए शिक्षक को सदैव तैयार रहना पड़ता है।

**शिक्षण के लिए शिक्षक की तैयारी –**

- शिक्षण कार्य राष्ट्रीय महत्त्व के संदर्भ में स्वयं के उतरदायित्वों को समझें और उसे ढंग से पूरा करें।
- अपने शिष्यों को उनके माता-पिता के लिए संवेदनशील बनाना। इस नैतिक दायित्व को निभाने के लिए शिक्षक को तैयार रहना है।
- छात्र-छात्राओं को सीखने के लिए निरंतर प्रेरणा देना एवं उत्प्रेरक के रूप में कार्य करना।
- बच्चों की सोच को सही दिशा देना जिससे वे यथास्थितिवाद की संस्कृति से बाहर निकलकर सामाजिक, शैक्षिक व सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए तैयार हों।
- बच्चों में सीखने, नवीन खोज करने, समस्या समाधान करने की क्षमता पैदा करनी होगी।
- सीखने की प्रक्रिया में सहभागी बनकर सामाजिक न्याय, लिंग, समता एवं समानता के उद्देश्यों को पूरा करना होगा।
- अपने विद्यार्थियों में आत्मसम्मान जगाकर उनकी आवश्यक क्षमताओं में संवर्द्धन करना होगा।
- समुचित प्रकार के शिक्षण साधनों एवं सहायक सामग्री का विकास कर जानकारियों को स्थानांतरित करना होगा।
- ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा जो कि छात्र-छात्राओं के लिए प्रभावशाली शिक्षण का मार्ग प्रशस्त कर सके।

**विद्यालय गतिविधियों का संचालन**- विद्यालय में विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ संचालित होती रहती है। उनमें निरंतर सुधार भी करना होता है। नयी जुड़ने वाली गतिविधियों को समझना पड़ता है। प्रशिक्षण के दौरान इन गतिविधियों के बारे में अधिक से अधिक जानना उन्हें स्वयं करके देखना एवं विद्यालय में जाकर अवलोकन भी करना आवश्यक है। इन गतिविधियों के कुछ उदाहरण हैं- प्रार्थना सभा संचालन, सांस्कृतिक शिक्षा,कक्षा-कक्ष की सज्जा, प्रदर्शनी लगाना, बाल सभा का आयोजन करना, शाला स्तर पर पत्रिका प्रकाशन, शैक्षिक भ्रमण, बच्चों की व्यायाम शिक्षा,

एन.सी.सी., स्काउट गाइड कार्यक्रम, पुस्तकालय संचालन, मुफ्त पुस्तक वितरण, मिड-डे-मील, प्रवेशोत्सव आयोजन,स्कूल प्रबंधन समिति संचालन, छात्र-छात्राओं का ट्रैक रिकॉर्ड रखना, विद्यालय भवन एवं उसकी स्वच्छता, शौचालय व्यवस्था आदि अनेक गतिविधियाँ आयोजित करनी होती हैं। प्रत्येक गतिविधि के आयोजन की जानकारियाँ प्राप्त करना आना चाहिए। विद्यालय में इन गतिविधियों को क्रियात्मक रूप में करने का कौशल विकसित किया जाना आवश्यक है।

**प्रशिक्षण का दर्शन** – शिक्षण प्रक्रिया में प्रशिक्षण कोई पृथक् क्रिया न होकर निरंतर सीखने की प्रक्रिया ही है। प्रशिक्षण उचित कौशल और ज्ञान को बढ़ाने और शिक्षक में वांछित दृष्टिकोण और व्यवहार विकसित करने का माध्यम है। प्रशिक्षण प्रक्रिया समाज के विकास के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने वाली प्रणाली है। अत: प्रशिक्षण को इस प्रकार लागू करना चाहिए जिससे कि विभिन्न कार्यक्रम एक-दूसरे के साथ जुड़कर संचित सीख प्रक्रिया का निर्माण करें। प्रशिक्षण प्रक्रियाएँ शिक्षकों में विषयों की जानकारी एवं उनको लागू करने की योग्यता को विकसित करेंगी।

**प्रशिक्षण प्रक्रिया** - प्रशिक्षण प्रक्रिया इस प्रकार तैयार की जानी चाहिए जिससे कि प्रशिक्षण में गतिरोध पैदा करने वाले कारकों को दूर किया जा सके। प्रशिक्षण के दौरान उन प्रशिक्षणार्थियों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जो कहीं पिछड़ रहे हैं। ऐसा करने पर पूरे समूह पर प्रशिक्षण का अधिक अच्छा प्रभाव पड़ेगा। प्रशिक्षण में पी.एल.ए. पद्धतियों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। इससे उनकी भागीदारी बढ़ेगी और सीखने में सक्रिय रहेंगे। इसके अलावा भूमिका निर्वहन, नाटक, अनुभवों का आदान-प्रदान, सामूहिक चर्चा, कहानियाँ, वैयक्तिक अध्ययन आदि का भी प्रशिक्षण में उचित स्थानों पर उपयोग करना चाहिए। प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार करने में तीन आधारभूत सिद्धांतों को अपनाया जाना चाहिए।

1. ज्ञात से अज्ञात की ओर जाने का सिद्धांत।
2. संचित सीख सिद्धांत
3. पुष्टिसीख का सिद्धांत

प्रशिक्षण प्रक्रिया को यदि छात्र-छात्राओं के विद्यालय में वास्तविक स्थितियों में क्रियान्वित किया जाएगा तो अधिक प्रभावशाली होगा। यथासंभव प्रशिक्षण संस्थाओं के साथ ही विद्यालय भी जुड़ा रहना चाहिए।

**मनोवैज्ञानिक पहुँच** – शिक्षण कला के विकास में बच्चों के मनोविज्ञान का ध्यान रखा जाना आवश्यक है। बच्चे अधिक लंबे समय तक बैठकर व्याख्यान सुनने के स्थान पर कम समय में सक्रिय रहकर सीखना ज़्यादा पसंद करते हैं। वे चाहते हैं कि विषयवस्तु उनके ज्ञान, परिवेश व उम्र के अनुरूप हो।

शिक्षण की गुणवत्ता और उसका प्रबंधन श्रेष्ठ कोटि का होना चाहिए। बच्चों के विद्यालय में रुकने के समय का अधिकतम उपयोग हो जाना चाहिए। बच्चे की आवश्यकता, योग्यता, क्षमता एवं रुचि के अनुकूल पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसामग्री सावधानीपूर्वक तैयार की जानी चाहिए।

**प्रशिक्षक कौन और कैसे हों? –**

प्रशिक्षण कार्य शुरू करने से पहले प्रशिक्षकों का सावधानी से चयन किया जाना चाहिए तथा उसके चयन का आधार उनकी परिपक्वता, उनका अनुभव और समय पर कार्य को पूरा करने जैसे गुणों को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। अत: प्रशिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि उनमें विषय का पूरा ज्ञान हो तथा सहभागियों की भागीदारी को बनाये रखने की कुशलता भी हो। क्योंकि सहभागियों में अनेक ऐसे लोग भी होते हैं जिन्हें विषय का अच्छा ज्ञान होता है। उनमें अपनी बात पर अड़े रहने की जिद्दी आदत भी होती है। अत: सहभागियों के आत्मसम्मान तथा उनके ज्ञान को ध्यान में रखते हुए प्रतिभागियों में पाई जाने वाली प्रवृत्ति पर सावधानी रखना आवश्यक है। प्रशिक्षण के प्रबंधकों के लिए यह आदर्श बात होगी कि वे अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के लोगों, जैसे, एन.जी.ओ., विश्वविद्यालयों के विद्वान लोग तथा समाज में सामजिक कार्यों से जुड़े अनुभवी लोगों को प्रशिक्षण के लिए आमंत्रित करें। प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि किसी एक प्रशिक्षक को ही प्रशिक्षण का कार्य न सौंपा जाए। इसके लिए विभिन्न प्रशिक्षकों की योग्यता का भरपूर सुदपयोग करना चाहिए। न कि किसी एक ही संस्था/संस्थान से संदर्भ व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाए। विभिन्न संस्थानों से संदर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण देने आएँगे तो प्रत्येक संस्था के विशिष्ट गुणों का फायदा उठाने का अवसर मिलेगा। प्रशिक्षण के लिए महत्वपूर्ण गुणों को हम कार्यशालाओं के माध्यम से अपने प्रशिक्षकों में विकसित कर सकेंगे।

**प्रशिक्षण स्थल** – प्रशिक्षण स्थल का वातावरण शांत, स्वच्छ और सुगम हो। ठहरने का स्थान प्रशिक्षण स्थल से अधिक दूर न हो। खान-पान एवं दैनिक कार्य के लिए समुचित सुविधाएँ होना आवश्यक है। खेल-कूद, मनोरंजन एवं यातायात की भी उचित प्रकार की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रशिक्षण स्थल पर या उसके नज़दीक ही विद्यालय स्थित हो जहाँ प्रशिक्षण कार्यक्रम को वास्तविक स्थितियों में चलाया जा सके। प्रशिक्षण तकनीक के आधुनिक साधन जैसे प्रोजेक्टर, एस.सी.डी.,मॉडल्स, नक्शे चार्ट आदि संदर्भ साहित्य उपलब्ध हों। प्रशिक्षण कार्यक्रम उबाऊ न हों। समय चक्र का निर्धारण भी परस्पर विचार-विमर्श से किया जाए। प्रशिक्षण स्थल कार्य करने के अनुकूल होना आवश्यक है। नयी पीढ़ी के उचित शिक्षण के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था को जितना सक्षम एवं कारगर बनाया जाएगा उतना ही देश की भावी पीढ़ी का सही विकास संभव होगा।